वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

अक्तूबर- 2014

* नई रोशनी में नये सत्य और तत्व
* धर्म – मार्ग सबसे कठिन मार्ग
* आपकी ज्योति ही मेरी एकमात्र आशा है
* मनुष्य – आत्मा की नियति
* एक सभा में बैठकर
* किसी भी जगह हो रहा अन्याय हर स्थान पर न्याय के लिए खतरा है
* शुभ संग्राम
* खुश रहने की अपनी आदतों को पहचानों

देवात्मा फरमाते है

अंह अनुरागी जन कभी भी अपने विषय में यह विचार नहीं कर सकता कि मुझे में कौन कौन से आत्मिक रोग हैं? वह यह समझता है कि मैं जो कुछ जानता हूं, वह ठीक जानता हूं। वह सत्य को लात मारता है। वह हर समय झूठ में रहना चाहता है। उसकी बुराई पर यदि कोई चोट लगाई जावे, तो वह सांप की मानिन्द फन निकालता है। अंह अनुरागी के लिए इस दुनियां और अगली दुनिया में केवल पतन ही पतन है (देवत्वसिंह जी जब अंह अनुराग को आत्म घातक रूप में देखकर उससे मोक्ष पाने के संग्राम में लग गये थे, तभी उनकी बेहतरी का ठीक क्रम चल सका था) हमारे संबंध में जिनके भीतर कुछ भी घृणा पैदा हो जाती है, अथवा जो लोग हम से फट जाते हैं, वह हमारे सम्बन्ध में कोई सच्चा साधन नहीं कर सकते। हां यदि पहले कभी वह ऐसा साधन करते भी हों, तो ऐसी अवस्था के आने पर उनका वह साधन बन्द हो जाता है। ऐसे लोगों को दूसरों की कोई खूबी देखना पसन्द ही नहीं होता, इसलिए उनके हित के सब दरवाजे बन्द रहते हैं।

नेचर का यह नियम है कि जिस चीज़ को तुम प्रेम करोगे, उस के तरफदार बन जाआगे। मनुष्यों में जो सबसे बड़ा नीच अनुराग फैला हुआ है, वह अंह अनुराग है। इस अंह अनुराग या 'मैं' के खिलाफ यदि किसी को कुछ कहो, तो वह उलट पुलट हो जाता है। वह दूसरे के सामने घटिया नज़र आना नहीं चाहता। उसकी तारीफ करो, तो वह खुश मालूम होता है, उस का चेहरा फूल की न्याई खिल जाता है, उसके खिलाफ कहो, तो चेहरा फक़ हो जाता है, रंग फीका पड़ जाता है। हमने जो उसकी 'मैं' पर सदमा लगाया, इस सदमे को खाकर वह हमें घूरता है। देवात्मा के भीतर 'मैं' का प्रेम कुछ भी नहीं है और न ही उस में किसी आदमी के लिए कोई प्रेम है। फिर तुम यह कह सकते हो कि आप हम नीच आदमियों से दुःख पाते हैं, आप हमें छोड़कर भाग क्यों नहीं जाते? इसलिए कि नेचर हमें भागने नहीं देती। हम रात भी तड़पते रहे हैं, फिर भी यहां पर आकर बैठ गए हैं। तुम्हारा भला करने में दुःख मिलता है, रोग मिलते हैं, परन्तु फिर भी नेचर यही कहती है कि तुम बेशक रोगों को अपने सिर पर लो, परन्तु तुम्हें भला करना ही होगा। मनुष्य न सचाई चाहता है, न भलाई। नेचर की यह इजाज़त नहीं कि वह गरम मसाले खाए परन्तु वह खाता है। नेचर कहती है कि चाय न पीयो, वह हानिकारक है, परन्तु वह कहता है कि मुझे तो बड़ा रस आता है। नेचर कहती है कि नमक न खाओ, वह हानिकारक है। पशु पक्षी बिना नमक के जीते हैं। देवात्मा इतने बूढ़े होकर भी बिना नमक के जीते हैं। परन्तु वह कहता है कि मैं नमक नहीं छोड़ सकता। हर एक नीच राग का पक्षपाती बनकर वह इसी प्रकार का जवाब देने के लिए लाचार है।

धर्म जीवन

खण्ड 27 अंक 10
अक्तूबर – 2014
वार्षिक मूल्य 50 रूपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

नई रोशनी में नये सत्य और तत्व

अपने देश में भृष्टाचार, बलात्कार, आतंकवाद, गरीबी, अपनी झूठी शान के लिए जाति वा गोत्र के आधार पर कत्ल, नशों की भरमार, मांसाहार के लिए लाखों पशुओं का वध, धन की लोलुपता से अपने भाईयों का ही कत्ल, मिथ्या में सिर से पैर तक डूबी हुई हमारी जनता आदि को देखकर जहां दुख और मायूसी होती है कि हम ऐसे देश के वासी हैं, परन्तु फिर भी हमारे भारतिय होने पर गर्व करने के भी कई कारण हैं। सबसे बड़ा कारण है कि यह वह तपोभूमि है जहां पर सात्विक धर्मों के साधन और तप इस कदर अधिक हुए है, जितने दुनियां के किसी कोने में सुने वा पढ़े नहीं गए। चाहे मिथ्या ही थी, परन्तु पुरातन काल में ऋषियों मुनियां ने, कई राजों महाराजाओं ने सुख स्वाद वा ऐश्वर्य की ज़िन्दगी को त्याग कर सचाई की खोज में बहुत तप किया है। इसका सबसे बड़ा उदाहरण महात्मा बुद्ध हैं। आजकल महात्मा बुद्ध पर बहुत अच्छा टी.वी. सीरियल आता रहा है। उसे देखकर हैरानी होती है किस प्रकार की सात्विक प्रकृति को लेकर वह जन्में, दुनियां के दुखों को अनुभव किया और उन दुखों को दूर करने के लिए उन्होंने राज पाठ, सुख आराम सब त्याग कर जंगलों की राह पकड़ ली। उनके पिता के लाख यत्न करने पर भी उन्हें सुख आराम की ज़िन्दगी आकर्षित नहीं कर सकी। सुन्दर नौजवान पत्नी और नवजात शिशु जिन्हें वह प्यार भी बहुत करते थे, उन्हें सत्य खोजने के राह से मोड़ नहीं सका। घोर तपस्या की, खाना पीना छोड़ दिया, सूख कर कांटा हो गए, परन्तु इसके बाद इस सत्य को अनुभव किया कि इस तरह अपना जीवन समाप्त करके मैं दूसरों को दुखों से बचने का मार्ग कैसे दिखाऊंगा, उन्होंने अपनी दिनचर्या बदल दी। साधना आरम्भ की और अपनी सात्विक प्रकृति की रोशनी में सबसे पहले इस सत्य को देखा कि मनुष्यों के दुखों का कारण उसकी ख़्वाहिशें हैं। उसके लिए अष्टमार्ग बताया और अपना संघ बनाया, जिसमें जो जो उनके उपदेशों को सुनता उनकी ओर खिंचा चला आता, परन्तु उनका भी बहुत विरोध हुआ। जब जब घर बार छोड़कर लोग उनके संघ में आते, उनके घर वालों, पंडितों, पुरोहितों, राजों महाराजाओं ने उनके मार्ग में कांटे बिछाए। तरह तरह के घिनौने इल्जाम लगाए परन्तु धैर्य के साथ वह उन्हें सहन करते रहे और अहिंसा वा सत्य का प्रचार करते रहे। उस समय के अनुसार उनकी शिक्षा विलक्षण थी। वह प्रकृति को मानते थे, परन्तु ईश्वर नहीं है, यह मानकर भी इसका प्रचार नहीं किया। विज्ञान का युग नहीं था, इसलिए उनके लिए सम्भव ही नहीं था कि वह यूनियों के भ्रम को जान सकते। मनुष्य के भीतर धन लोलुपता, मान मर्तबा की गहरी इच्छा, इर्षा, द्वेष

आदि घटिया इच्छाओं के विरूद्ध बोलते थे, उनके प्रभाव से काफी जनता में परिवर्तन आया और उनके प्रचारक दूर दूर देशों में भी गए और अब तक भी बुद्ध मत का प्रभाव उन देशों में है। अपने देश में भी बुद्ध मत के अनुयायी बहुत हैं। परन्तु उस अहिंसा के पुजारी को मानने वाले बहुगिणती में मांसाहारी हैं। उनके धार्मिक स्थान में कई कविंटल मांस पकता है। परन्तु उनका अपना जीवन सात्विक जीवन की प्रकाष्टा थी। इसीलिए उनको Light of Asia (एशिया की रोशनी) कहा गया है। अब तक परमात्मा के साथ योग या पूजा पाठ में जनता व्यस्त थी, उन्हों ने मनुष्य का ध्यान अपनी ओर फेरा।

इसके भिन्न भी हमारे देश में सात्विक पुरुषों ने एक एक पहलू में बहुत सुन्दर दृष्टान्त प्रस्तुत किए हैं और अपने अनुयाईयों को भिन्न भिन्न बुराईयों के विरुद्ध शिक्षा दी है। यह भी हमारे लिए गर्व की बात है। परन्तु इस नेचर में एक और अद्भुत घटना पैदा हुई जिसके कारण सारा भारत ही नहीं, सारा विश्व गर्व करेगा।

नेचर के विकास क्रम में जहां सात्विक जीवन धारी पैदा हुए, उसी क्रम में ऐसा अलौकिक आर्विभाव पैदा हुआ, जिसमें सात्विक भावों के साथ साथ देव भावों अर्थात देव शक्तियों का विकास हआ। उनमें सचाई भलाई का अनुराग जहां प्रकाष्टा पर था, उतनी ही घृणा मिथ्या, पाप और झूठ के लिए थी। जैसे जैसे उनकी देवशक्तियां विकसित होती गई, उनसे एक ऐसी विलक्षण ज्योति का प्रकाश हुआ जिसमें उन्होने न केवल मनुष्यों के दुखों को देखा, उनमें पाप और मिथ्या को देखा, बल्कि विज्ञान की रोशनी में मनुष्य जीवन के विषय में वह सत्य और तत्व देखे, जो आजतक किसी ने कल्पना भी नहीं की थी। उन्होंने यह देखा कि इसमें कोई शक नहीं कि मनुष्य की अनुचित ख़्वाहिशें उसे दुखों में फंसाती हैं, परन्तु यह ख़्वाहिशें कहां पैदा होती हैं, क्यों पैदा होती हैं? उनको मिटाने के लिए क्या साधन किए जाएं? कैसे देखा जाए? उन्हें कौन दिखा सकता है? इस ओर एक बिल्कुल अनोखी सोच, अनोखी शिक्षा इस विश्व को दी।

जब भी संसार में कोई लकीर से हटकर खोज हुई है, उसका सदा ही बहुत घोर विरोध हुआ है, फिर जब धर्म की बात हो तो यह विषय बहुत sensative बन जाता है। धर्मों की कट्टरता धर्म के नाम पर किसी नई सचाई को कभी स्वीकार करने को तैय्यार नहीं होने देती, इसलिए इस नये आर्विभाव जिनको हम परम पू० भगवान देवात्मा के नाम से सम्बोधित करते हैं, का भी घोर विरोध हुआ। उन्हें पागल और ख़बती कहा गया, उन पर वह घिनौने इल्ज़ाम लगाए गए, जिनको पढ़ना भी कठिन हो जाता है। परन्तु इस सारे विरोधों ने, तड़पनों ने, कोर्ट कचहरियों में अपमानित होने ने उनको सत्य के मार्ग से हटने नहीं दिया। उन्होंने न केवल ऐसे असह्य दुखों को सहन किया, अपने स्वस्थ्य को भी कुर्बान किया, बल्कि इन हालातों में भी ऐसे सत्यों और तत्वों की खोज की जिनकी नींव विज्ञान पर है, जो आज तक किसी ने कल्पना भी नही की थी। उन्होंने आत्मा और धर्म की नई परिभाषा दी। उनकी सारी शिक्षा नेचर और उसके अटल नियमों पर आधारित है, इसलिए विज्ञान मूलक है। अब तक जितने धर्म गुरुओं ने शिक्षा दी थी या ग्रन्थों में पाई जाती है, उसका आधार ईश्वर वा परमात्मा रहा है। जब परमात्मा का अस्तित्व ही कल्पना मूलक है, तो उसको लेकर शिक्षा भी कल्पना पर आधारित है। पू० भगवान ने नेचर के सत्य नियमों और घटनाओं पर आधारित मनुष्य के सम्बन्ध में और शिक्षा के भिन्न चार महा तत्वों की खोज की जिन

सत्यों को नेचर के अटल नियमों के अनुसार प्रैक्टीकल रूप से परखा जा सकता है।

पहला तत्व आत्मा की परिभाषा क्या है। उन्होंने फरमाया है कि आत्मा न तो कोई परमात्मा का अंश है न कोई खुदा की फूंक है, बल्कि मनुष्य का अस्तित्व दो प्रकार से बना है उसका गठन प्राप्त शरीर और विविध शक्तियों से संयुक्त गठन प्राप्त जीवनी शक्ति जिसे हम आत्मा कहते हैं जिसने शरीर का निर्माण किया है। इसकी परीक्षा की विधियां बताई हैं, जिससे यह सत्य स्पष्ट हो सकता है।

दूसरा तत्व है कि मनुष्य के शरीर और जीवनी शक्ति अर्थात् आत्मा में घनिष्ट सम्बन्ध है। शरीर के बिना आत्मा और आत्मा के बिना शरीर जिन्दा नहीं रह सकता। जब शरीर मर जाता है तो आत्मा शरीर से सूक्ष्म सैल लेकर अपने लिए सूक्ष्म शरीर बनाता है और उनके आधार पर परलोक के उच्च वा नीच लोक में वास करता है। मनुष्य की अच्छी वा बुरी चिन्ताओं वा क्रियाओं के अनुसार सूक्ष्म सैलों का निर्माण होता है। उसकी नीच गतियों के अनुसार उसके सूक्ष्म सैल कमज़ोर वा खराब होते हैं।

तीसरा महा तत्व जो पू० भगवान ने रोशन किया है वह यह कि "मनुष्यात्मा नेचर की विकासकारी गतियों के विरूद्ध अपनी गतियां ग्रहण करके रोगी और पतित होकर पतन के अन्य महा भयानक फलों को भोगने के भिन्न अपनी निर्माणकारी शक्ति अर्थात आत्मा के बल को क्षय करता है। और यदि वह अपनी इन पतनकारी गतियों और उनके विकारों से मोक्ष लाभ करने के योग्य न बन सके और उसका पतन बराबर जारी रहे तो वह क्रम क्रम में अपनी सारी निर्माणकारी शक्ति अर्थात आत्मा की जान को खोकर उसके नाश के साथ आप भी नष्ट हो जाता है।

इससे आगे पूजनीय भगवान ने फरमाया है, "मनुष्य की सब मानसिक चिन्ताएं और शारीरिक क्रियाएं कि जो सत्य और पर हित अथवा नेचर के निर्माण वा विकासकारी नियमों के विरुद्ध हों, पतनकारी गतियां कहलाती हैं- - - - यह दो प्रकार के कारणों से हैं- (1) मनुष्य के सब प्रकार के नीच सुख अनुराग और मनुष्यात्मा की सब प्रकार की नीच घृणाएं।"

अब नीच सुख अनुराग क्या हैं? नीच घृणाएं क्या हैं? सुख लालसाएं क्या हैं? सुख अनुराग कैसे पतित करते हैं। मनुष्य में नीच घृणाओं की उत्पत्ति कैसे होती है? मनुष्य में नीच घृणा भावों की वर्तमानता किन किन मोटे लक्षणों से पहचानी जा सकती है? और उनको देखने वा उनसे मुक्त होने के लिए जिस देव ज्योति वा तेज की अवश्यकता है, वह कहां से प्राप्त हो सकता है?

इन सब प्रश्नों के विज्ञान मूलक उत्तर पाने की उत्सुकता रखने वाले अधिकारी जन "मनुष्यात्मा के सम्बन्ध में चार महातत्व" जो पू० भगवान द्वारा रचित अद्वितीय विज्ञान पर आधारित पुस्तक है, उसे पढ़ने की कृपा कर सकते हैं और अपनी जिज्ञासा को तृप्त कर सकते हैं।

चौथा आत्मिक महान तत्व जो पूजनीय भगवान ने रोशन किया है, वह है कि जब नीच चिन्ताओं वा गतियों से आत्मिक पतन होता है तो उसके क्या क्या भयानक फल होते हैं?

(1) शारीरिक विविध रोगों की उत्पत्ति और उनके द्वारा विविध कष्ट और पीड़ाएं और कई समयों में अकाल मृत्यु। इसका तत्पर्य है कि मनुष्य खान पान का दास होकर, नशों का दास होकर काम अनुराग का दास होकर किस प्रकार शरीर को हानि पहुंचाता है, इसकी उदाहरणें नित्य जीवन में हमें मिलती हैं। लाखों करोड़ों मनुष्य असंयमी होकर विविध दुखों और पीड़ाओं

से गुजरकर अल्प काल में मृत्यु का शिकार हो जाते हैं।

(2) <u>विविध प्रकार का दासत्व और उसके द्वारा विविध प्रकार की भयानक यंत्रणाएं और अन्य हानियां।</u> इसका अर्थ है :- सम्बन्धियों का, सन्तान का, धन का, इज्ज़त का मान बड़ाई प्रशंसा का, पद प्रभुत्व का, अपने शरीर का अनुचित मोह मनुष्य से क्या क्या भयानक गतियां करवाता है, किस प्रकार बेईमान, झूठा, मक्कार बनाता है, अपनों के ही कत्ल करवाता है और फिर कोई सुख न मिलने पर कैसे छटपटाता है और घुल घुलकर मौत को प्राप्त होता है। अपनी साफ हानि देखकर भी उससे मुड़ नहीं सकता, इन नीच सुखों की गुलामी से ऐसी दुर्दशा होती है, मनुष्य बेबस और लाचार हो जाता है, अपनी और दूसरों की महा हानि करता है। अपने स्वार्थ को तजकर किसी और के लिए कुछ नहीं कर सकता और तड़पते रहने के लिए मजबूर है।

(3) <u>उल्टी दृष्टि और उसके भयानक फल</u> धीरे धीरे उपरोक्त सब नीच सुख अनुराग और उनकी दासता मनुष्य को इस हालत में पहुंचा देती है, वह अपनी गतियों को खराब देखने के स्थान पर, उनको सुन्दर और ठीक रूप में देखने लगता है। बुराईयों का पक्षधर बन जाता है। न केवल अपनी नीचता नहीं देख सकता बल्कि अपने से सम्बन्धित किसी की भी नीचता न स्वयं देख सकता है और न अपने किसी बड़े से बड़े हितैषी से उसके विरुद्ध सुन सकता है। अपने मिथ्या संस्कारों का पक्षधर होकर किसी तर्क के लिए भी तैय्यार नहीं होता। नीच सुख अनुरागों की तृप्ति करने वालों को अपना हितैषी समझता है।

(4) <u>आत्मा की विकृति और उसकी महा शोचनिय मृत्यु</u> नीच सुख अनुरागों के अधीन पतनकारी चिन्ताएं वा क्रियाएं करके उसका आत्मा दिनों दिन मैला, कठोर, कुत्सित और दुर्बल अर्थात विकृत बनता जाता है: -

(1) वह अपने उच्च कोटि के सूक्ष्म सैलों को खो देता है।

(2) जिस जिस अंग के द्वारा अपेक्षाकृत बहुत अधिक पर हानि वा पाप करते हैं उस अंग के सम्बन्ध में सूक्ष्म सैलों को बनाने की योग्यता को पूर्णत: वा कुछ खो देता है। जिस अंग से जिस कदर नीच गतियां होती हैं वह नाक, कान, मुंह, हाथ, पैर, जिव्हा, जननेन्द्रियों आदि या तो पूर्णता नहीं बनती या अधूरी बनती हैं। इस प्रकार लंगड़ा लूला होकर परलोक में भी महा दुख भोगता है।

(3) नीच गतियां से मोक्ष पाने की योग्यता भी खो बैठता है।

(4) इस प्रकार अपने आत्मा की निर्माणकारी शक्ति को दिनों दिन क्षय करते करते उसे पूर्णत: नष्ट कर लेता है, इस प्रकार उसका अस्तित्व ही नष्ट हो जाता है।

यह महा भयानक फल नेचर के नियमानुसार ऐसे नीच सुख अनुरागी जनों को मिलते हैं जिसमें कोई भी और किसी के लिए भी रियायत नहीं।

परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने यह अद्भुत वैज्ञानिक सत्य जो मनुष्यात्मा के विषय में खोजे हैं, वह आज तक किसी ने नहीं खोजे, उनके सत्य अनुराग में ही विज्ञान की रोशनी में यह खोजने की पूर्ण सामर्थ्य थी, इन दो महान वस्तुओं के बिना सात्विक जीवन धारी आत्माओं के लिए भी सम्भव नहीं थी।

उन्होंने अपनी अद्वितीय देव ज्योति में मनुष्य के दुखों के मूल कारण को देखा है। उनके भीतर ही मनुष्य की इन उपद्रवी नीच शक्तियों को दमन करने और नष्ट करने की क्षमता है।

यदि हमने अपने नीच अनुरागों वा नीच घृणाओं की पतनकारी चिन्ताओं वा गतियों से मोक्ष पानी है, जो नीच शक्तियां कम व अधिक मात्रा में हम सब में है वह शक्तियां हमें अन्धकार की ओर धकेलती हैं, हमारा पतन करती हैं, हमें अपना और अपने साथी मनुष्यों का शत्रु बनाती हैं, तो परम पूजनीय भगवान के देव रूप में ही वह सामग्री है जो आत्मिक रोगों को दिखाती है और अधिकारी आत्माओं को उनसे निजात देकर उच्च जीवन में विकसित करती है। वही देवात्मा एक मात्र सत्य धर्म के शिक्षक हैं। उन्होंने ही एक मात्र नेचर के अटल नियमों वा घटनाओं के आधार पर नया आत्म दर्शन इस संसार को दिया है।

हमारा बहुत बड़ा सौभाग्य है कि हम अति तुच्छ शक्तियां रखने वाले जनों को उनकी इस अद्वितीय शिक्षा को समझने वा नाम मात्र ग्रहण करने का सौभाग्य मिल गया है, जो अधिकार बड़े बड़े महाराजाओं, विद्वानों, वैज्ञानिकों, धनवानों को प्राप्त नहीं। सत्गुरू धर्म के शिक्षक ही नहीं वह हमारे बचावन हार हैं, हमें मिथ्या और मोटे पापों से बचाया है, हमें उच्च भावों को विकसित करने का मार्ग दिखाया है, हमारे सम्बन्धों को स्वर्गिय बनाया है। इसलिए हम इस अद्वितीय धर्म शिक्षक और उनके संदेश वाहक कर्मचारियों को जितना भी धन्यवाद दें, थोड़ा है।

सुरजीत बराड़

धर्म – मार्ग

सबसे कठिन मार्ग

प्रत्येक मनुष्य अपने माता - पिता से जन्म के साथ हि वासनाओं और उत्तेजनाओं के बीज विरासत के रूप में लेकर इस दुनियां में आता है। फिर वह ऐसे मनुष्यों के हाथों में पड़ जाता है, जिनके भीतर यह बीज (वासना और उत्तेजना से परिपूर्ण भाव - शक्तियां) पहले से हि वर्तमान होती हैं, तथा वह अपनी खुराक पा - पाकर बड़े - बड़े वृक्ष बन चुकी होती हैं। अब वह बेचारा नन्हा बालक जिसे अपने हानि - लाभ का कोई ज्ञान तथा बोध नहीं होता, अपने मृत्यु और जीवन की कोई होश नहीं होती, वह ज्यों ज्यों आयु के लिहाज़ से बड़ा होता जाता है, त्यों त्यों अपने सम्बन्धियों से वासनाओं और उत्तेजनाओं को बढ़ाने की खुराक पाता जाता है। आयु के बढ़ने के साथ साथ उसकी वासना इत्यादि सम्बन्धी भाव - शक्तियां भी उसके शरीर की तरह पलती और बलिष्ट होती जाती हैं। जब ऐसा बच्चा जवानी में प्रवेश करता है, तब तक वह वासनाएं इतनी बलवान हो चुकी होती हैं, कि वह अपनी तृप्ति के लिए उस नौजवान को हरकत में लाना शुरू करती हैं। ज्यों ज्यों वासनाओं को खुराक मिलती जाती हैं, त्यों त्यों वह उसकी गति और तेज़ होती जाती है। अब वह उनकी तृप्ति के लिए पहले से कहीं अधिक चिंताएं और क्रियाएं करता जाता है।

यदि ऐसे नौजवान के जीवन का गहराई से अवलोकन किया जाए, तो साफ पता चलेगा कि पहले की तुलना में अब उसकी वासनाएं और उत्तेजनाएं बहुत प्रबल रूप से बढ़ चुकी हैं। वह अब यहाँ तक बलवान हो चुकी हैं कि उसके दिल - दिमाग पर उन्हों ने पूरी तरह कब्जा कर लिया है। अब यह हालत है कि उसकी कोई चिंता या क्रिया ऐसी नहीं, कि जिसमें उसकी वासनाओं और उत्तेजनाओं का हाथ न हो। ऐसी

मानसिक - अवस्था रख कर उसके लिए कोई धर्म - मूलक चिन्तन वा क्रिया करना, किसी को उचित सुख पहुंचाना, किसी की कोई हितकर सेवा करना बहुत मुश्किल हो जाता है।

सौभाग्य से यदि ऐसे नौजवान का सच्चे धर्म - दाता सदगुरू की ओर मुंह हो जाता है: वह उनके श्री चरणों में बैठने का अधिकारी हो जाता है: धर्म - मार्ग पर चलने के लिए उसको उसी मार्ग पर चलने वाले साथी प्राप्त हो जाते हैं, जो उसके भीतर धर्म - अभिलाषा को बढ़ाने का यत्न करते है: (जबकि लाखों और करोड़ों लोग तो ऐसे हैं कि जो धार्मिक दिखते हैं, वास्तव में धर्म - वान होते नहीं)। ऐसा नौजवान ऐसे धर्म - मार्ग के सच्चे साथियों को पहले शक और फिर आश्चर्य की निगाह से देखता है। फिर कुछ कुछ उनके साथ अपना सम्बन्ध बोध करने लगता हैं, परन्तु वासनाओं और उत्तेजनाओं का उस पर बढ़ा हुआ अधिकार होने के कारण उसकी चिंताएं और गतियाँ नीच होती हैं। शुरू शुरू में उसे अपनी वह नीच गतियाँ हानिकारक दिखाई नहीं देतीं।

जीवन - दाता परम पूजनीय भगवान् देवात्मा तथा उनके प्रचारकों के बहुत बड़ी मुसीबतों और कष्टों में से गुजरने के बाद, गहरे से गहरे यत्नों के द्वारा उसके अन्दर कोई ज्योति की किरण जानी शुरू हो जाती है तब वह कुछ कुछ अपनी गतियों को अपने लिए हानिकारक अनुभव करने लगता है। रात दिन अपनी चिन्ताओं और क्रियाओं की परीक्षा करके उसे मालूम होने लगता हैं कि मैं अपने बस में नहीं हूँ। अपनी नीचता - मूलक भाव - शक्तियों के हाथों बिका हुआ हूँ। मुझ पर तो नीच वासनाएं और उत्तेजनाएं सवार हैं। ऐसा ज्ञान और बोध लाभ करने पर वह अपनी चिंताओं और गतियों को बदलना चाहता है। (अपनी नीच - चिंताओं, गतियों तथा झूठ एवं बुराई के साथ संघर्ष करना हि वास्तव में धर्म - मार्ग पर चलना है)। अब वह उसे कुछ बुरी लगने लगती हैं। पहले जिन गतियों से वह खुशी लाभ करता था, अब उनसे तकलीफ महसूस करता है।

शुरू शुरू में वह समझता था कि मैं धर्म - मार्ग का यात्री बन गया हूँ। जब तक परम पूजनीय भगवान् देवात्मा की देव - ज्योति न मिले, तब तक किसी मनुष्य का धर्म - जगत में प्रवेश करना बच्चों के खेल से बढ़ कर और कुछ नहीं है। अब जब वह धर्म - मार्ग पर कदम रखने लगता है तो उसकी वासनाएं और उत्तेजनाएं उसका गला पकड़ लेती हैं, और उसको उस रास्ते पर आगे नहीं जाने देती, बल्कि खींचकर नीचे गिरा देती हैं। हाय: बेचारा क्या करे? वह तो अपने वश में ही नहीं। वह तो वासनाओं और उत्तेजनाओं के ऐसे आधीन हो चुका है, जैसे मदारी के हाथों में बन्दर। अब वह यह महसूस करने लगता है कि मुझे तो इस धर्म मार्ग का पता हि नहीं था। मैंने यूँहीं अपना सारा जीवन बर्बाद कर लिया। मैं अब अवश्य धर्म - मार्ग पर चलूँगा। लेकिन धीरे - धीरे अपने निज के तजुरबे से उसे पता चलने लगता है कि वह उस रास्ते पर (धर्म - मार्ग पर) नहीं चल सकता। यह मार्ग उसके लिए बहुत कठिन मार्ग है। जब वह इस धर्म - मार्ग पर चलता है, तो उसकी वासनाएं और उत्तेजनाएं उसे नीचे गिरा देती हैं। उसका इरादा डावांडोल हो जाता है। उसकी हिम्मत टूट जाती है।

वह बहुत सौभाग्यशाली है, लेकिन उसे अपने सौभाग्य का अभी बोध नहीं है, उसे नहीं मालूम कि उसके रक्षाकारी और सहायकारियों ने उस पर बहुत मेहनतें और संग्राम किए हैं। उनकी अनथक कोशिशों के बाद वह यहाँ तक पहुंचा है। उसे तो अभी तक

केवल इतना हि पता चला है कि मैं तो अपने शत्रुओं (अर्थात वासना और उत्तेजना शक्तियां) के हाथों बिका हुआ हूँ। उसके रक्षाकारी और सहायकारी उसे हिम्मत दिलाते हैं, परन्तु वासनाएं उसे नीचे गिरा देती हैं। वह कहता है कि मैं बहुत अयोग्य हूँ, और सचमुच वह है भी बहुत अयोग्य। लेकिन ये कैसे संभव हो सकता है कि अयोग्य मनुष्य अपनी किसी ताकत के बलबूते ऐसे बलवान शत्रुओं के साथ जंग करते हुए, चारों ओर विरोधिताओं से घिरा होकर, ऐसे मार्ग पर चल सके?

ऐसी कृपा-पात्र अवस्था में किसी भी धर्म-मार्ग के यात्री के लिए आवश्यक है कि वह अपनी नीच रुचियों पर विचार करे: अपने भीतर गोता लगाकर देखे, और सोचे कि मैं जो आज यहां तक पहुँचा हूँ, कई नीच भावों और गतियों से जो मेरा छुटकारा हुआ है मेरे शत्रु मुझे दिखाई देने लगे हैं-क्या यह सारी लीला मेरी किसी अपनी शक्ति वा योग्यता से हुई है ? निष्पक्ष तथा विचार-पूर्वक प्रयास करने पर उसे पता लगेगा कि नहीं, यह मेरे प्रयास का फल नहीं है। यह तो किसी और ने खूने-जिगर (दिल का रक्त) निचोड़ कर मुझे यहाँ तक पहुंचाया है। मुझे यहाँ तक पहुंचाने में उन्होंने बड़ी-बड़ी तकलीफें और मुसीबतें उठाई हैं। ऐसी परीक्षा करने के साथ उसके अन्दर यह विश्वास होना आवश्यक है कि वह अपने आपको अकेला न समझे, अयोग्य न समझे, तथा अपने बड़ों की आज्ञा में रह कर इस मार्ग पर आगे की और कदम बढ़ाता चला जाए। अपने शत्रुओं के साथ जंग करने के लिए सजग रहे, तैयार रहे। अपने भीतर ऐसा विश्वास पैदा करे कि जिनके सहारे से मैं यहाँ तक पहुंचा हूँ वही मेरे सहायक, रक्षाकारी तथा उपकारी मुझे धर्म-मार्ग पर और आगे से आगे भी ले जाएंगे। यह विश्वास कोई काल्पनिक विश्वास नहीं है, बल्कि एकदम सच्चा विश्वास है। यह ऐसा विश्वास है कि जिसके हवाले होकर मनुष्य को धर्म-मार्ग पर चलने कि लिए किसी दुःख मुसीबत की परवाह नहीं रहती। उसको निश्चय हो जाता है कि सत्य विश्वास रख कर पक्का इरादा करके धर्म-मार्ग पर चलने के बिना मैं जीवन के लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकता। मेरे जीवन के सफल होने का तथा मेरे आत्मा की सत्य मोक्ष और विकास का इसके सिवाय और कोई रास्ता नहीं है। यदि मैं इस नियम का पालन न करूंगा, तो निश्चय इस दुनिया से सदा सदा के लिए खत्म हो जाऊंगा।

जब इस मार्ग को छोड़ कर मेरा विनाश है, तो इससे तो यही बेहतर है कि मैं इस मार्ग (धर्म-मार्ग) पर चलते चलते विनष्ट हो जाऊं। ऐसे विश्वास को लेकर ज्यों ज्यों वह इस मार्ग पर कदम बढ़ाता जाएगा, तजुरबा उसे बताएगा कि वह कितनी दूर चला आया है: कितना मार्ग उसने तय कर लिया है: इतना मार्ग तय करने पर वह कितनी रोकों, मुसीबतों और शत्रुओं पर विजयी हुआ है: उसको सहायकारियों की कितनी सहायता मिली है: कितनी रक्षा हुई है! उसका कितना साथ दिया गया है।

अतः प्रिय पाठक गण!, हम इस अमूल्य सन्देश के मर्म को समझ कर आत्मसात कर सकें, और आत्म-हित के सच्चे आकांक्षी बन कर धर्म-मार्ग को हृदयगत भावों से अपना सकें, चाहे यह मार्ग कितना भी कठिन है। ऐसी मेरी शुभ कामना है।

चन्द्रगुप्त
(अम्बाला)

आपकी ज्योति ही मेरी एकमात्र आशा है

जबकि मानवता अपनी सारी बुद्धि, सारे ज्ञान और सारी प्रतिभा तथा ऊंची सभ्यता का खोखला दावा करके भी, आत्मा के ज्ञान के विचार से और इस विचार से कि मनुष्य का मनुष्य के साथ तथा मनुष्य से नीचे के जगतों के साथ क्या सम्बन्ध होना चाहिए, उस महा भयानक अन्धकार में पड़ी हुई है, आपने करुणा करके मुझे वह देव ज्योति प्रदान की है, जिसने इस गहरे अन्धकार को दूर कर दिया है। मैं देखता हूं कि जब तक यह ज्योति मेरे जीवन के पथ को ज्योर्तिमान करती रहती है, तब तक मैं अपनी उन राक्षसी वासनाओं, नीच रुचियों और नीच अनुरागों से युद्ध करता रहता हूं जो दूसरों के अधिकारों का अपहरण करने में ही अपनी नीच तृप्ति पाते हैं। इस देव ज्योति से मैं काम अनुराग, धन अनुराग, ईर्ष्या, द्वेष, स्वार्थ, अंहकार आदि नीच अनुरागों और नीच रुचियों के वास्तविक रूप को देखता हूं, और यह भी देखता हूं कि जब वह मनुष्य पर अपना अधिकार कर लेती हैं, तो आत्मिक जीवन के लिए कैसे भयानक फल पैदा करती हैं। आपकी इसी ज्योति में मैं उच्च भावों और सात्विक भावों, यथा देवात्मा के देव रूप के लिए श्रद्धा, उच्च आत्माओं के लिए श्रद्धा, कृतज्ञता, कर्त्तव्य बोध, वफ़ादारी, निष्काम पर सेवा आदि तथा आत्मिक जीवन के लिए उनके जीवन दायक और प्राण संचारक फलों के सच्चे रूप का दर्शन करता हूं।

आपने मेरे हृदय को और अधिक ज्योर्तिमान करके मुझे यह महान सत्य दिखाया है कि मेरा वास इस नेचर में है, और मेरा जीवन विश्वगत सम्बन्धों में है। यह सम्भव नहीं कि नेचर के विविध सम्बन्धियों के साथ मेरा सम्बन्ध न हो। प्रश्न सारा यह है कि मैं किन भावों से और सूत्रों से औरों के साथ जुड़ा हुआ हूं। आपकी ज्योति में मैं दिखता हूं कि एक कसाई गाए के साथ किसी नीच भाव से सम्बन्ध रखता है। वह उसको चारा खिलाता और नाना प्रकार से उसकी देखभाल करता है, परन्तु यह सब कुछ उसको कतल करने और उसका मांस और खाल बेचने के लिए करता है। इसी प्रकार मनुष्य अपनी पत्नी, बच्चों, भाई बहनों, माता पिता, देशवासियों और मनुष्य मात्र तथा पशुओं, पौधों और भौतिक पदार्थों के साथ कुछ भावों और सूत्रों से बँधा हुआ है। यह केवल आपकी ज्योति ही दिखा सकती है कि वह भाव कौन से हैं और मनुष्य के साथ, मनुष्य के सम्बन्ध में तथा अन्य सम्बन्धों में यह भाव क्या फल उत्पन्न करते हैं। जिस अराजकता का संसार में राज्य है, और मनुष्यों के परस्पर व्यवहार से जो दुख और हाहाकार मानवता में देखा जाता है, स्पष्ट रूप से बताता है कि मनुष्य किन सूत्रों या भावों से मनुष्यों के साथ जुड़ा हुआ है।

मैं देखता हूं कि मैं स्त्री जाति से सम्बन्ध रखता था। मैं उनके सम्बन्ध में कुछ अच्छे भाव भी रखता था। परन्तु एक और प्रबल भाव मुझे एक कसाई की भान्ति कठोर और स्वार्थी बना कर स्त्रियों के उचित अधिकारों को देखने से अन्धा बनाता था और मैं नाना अंगों में गलत जाता था। मैं देखता हूं कि व्यवसाय में भी मनुष्यों से मेरा वास्ता पड़ता था। परन्तु मेरा उनके साथ सम्बन्ध यही था कि वह धन मुझे कितना देते हैं। मेरी निगाह उनकी जेब पर होती। मुझे वह केवल धन उपार्जन का एक साधन मात्र दिखाई देते थे। एकमात्र आपकी ज्योति ने मुझे ऐसे व्यवहार का बुरा रूप दिखाया और उस कुमार्ग पर चलने से मुझे बचाया। प्रायः सारी मानवता अपनत्व को लेकर एक दूसरे से जुड़ी हुई है। बच्चे सुख आराम के लिए माता पिता को प्यार करते हैं। उनके इन सुखों और इच्छाओं की पूर्ति में तनिक भी कमी हो जाए तो वह अपने माता पिता पर दांत पीसते हैं और एक एक बार उनकी हत्या तक कर देते हैं। यही भाव भाई बहनों

और बिरादरी और जाति के सम्बन्ध में काम करते हैं। जब आप की ज्योति मुझ तक पहुंची तो मैं इन भावों का भयानक रूप देखकर भयभीत हो गया। आपकी शक्ति ने मेरे ऐसे भावों को बढ़ने से रोक दिया और अब मैं स्वस्थ और बेहतर अनुभव कर रहा हूं। यह नहीं कि मैं उनसे पूर्ण रूप से मुक्त हो गया हूं, परन्तु आपके चरणों में वास करते और आपके देव प्रभाव पाते हुए मैं उन पर काबू पाने के योग्य बन गया हूं।

मेरे भगवन्! मेरी अवस्था तो यह है कि मेरे भीतर अभी ऐसे भाव सोए पड़े हैं जो मुझे उस अंधकार में धकेल सकते हैं कि जिस अंधकार ने सारी मानवता को अपनी लपेट में ले लिया है। करोड़ों मनुष्य इसी अंधकार में जीवन व्यतीत करते हैं, और अपने ही जैसे अंधकार ग्रस्त जनों को गले से लगाते हैं। वह लोग इस काली रात के कभी समाप्त न होने में सहायक हैं। मेरे भीतर वह रोशनी नहीं जो मुझे सदा सावधान रख सके, जो नीच शक्तियों का भयानक रूप मुझे दिखा सके और अन्धकार के लिए भी मेरे भीतर भय पैदा कर सके। आपकी पावन ज्योति ही मेरी एकमात्र आशा है। उसको पाकर और आपके पावन चरणों में रह कर ही मेरा जीवन बच सकता है और सुरक्षित रह सकता है। मेरे भगवन! मेरी प्रार्थना है कि आपकी अद्वितीय ज्योति सदा मेरा पथ प्रदर्शन करती रहे।

मैं अब समझता हूं कि वह व्यक्ति जो एक समय में पाप और बुराई के विरुद्ध शेर की न्याईं गरजते थे, अब स्वयं पाप और बुराई का शिकार क्यों हो गए हैं?.... जब उनका आपकी ज्योति में वास था तो वह नीच शक्तियों या भावों के भयानक रूप को देखते थे और पाप और झूठ से जिस अंधकार की उत्पत्ति होती है, उससे भी भयभीत होते थे। परन्तु ज्यों ही आपकी ज्योति ने उनका साथ छोड़ दिया - उन्हीं की नीचताओं के कारण - और उनके नीच भाव भड़के, तो वह अपने असल रंग रूप में प्रकट हो गए। उनके इस पतन का हजारों ने स्वागत किया। उनके भाग्य पर मोहर लग गई और धीरे धीरे वह इतने पतित हो गए कि कृतघ्न भी बन गए।

भगवन! मेरी यही प्रार्थना है कि मैं आपके चरणों से लिपटा रहूं, आपकी ज्योत में वास करूं, अपने नीच भावों की प्रेरणाओं को सदा दमन करता रहूं, और संसार में सबसे बढ़ कर आप पर भरोसा कर सकूँ।

प०व०क०

(एक पाठक के विचार)

आपने ''धर्म-जीवन'' में साथी-सेवक श्रीमान मास्टर हंसराज जी के बारे में जो सूचना तथा लेख प्रकाशित किया है, वह जहाँ बहुत सुन्दर तथा दिलों को उभारने वाला है, वहीं आपके सुन्दर हृदय तथा साथी सेवकों के प्रति आपकी भावशीलता का भी सच्चा प्रमाण है। आपने बहुत ही सुन्दर तथा सिलसिलेवार ढंग से श्रीमान जी के सरल तथा सुन्दर जीवन के बारे जानकारी प्रस्तुत की है, उसके लिए आपका हृदय-गत भावों से धन्यवाद करता हूँ। मैं अक्सर यह महसूस करता हूँ कि परम पूजनीय भगवान् देवात्मा के श्री चरणों में आकर जीवन सफल करने की यह पहली शर्त है कि उनका अनुगत ''सरल-हृदयी'' हो। मैं और श्रीमान मास्टर हंस राज जी साथ साथ बंठिडा में कई घरों में विजिट किया करते थे, तथा मेरे दिलपर उनके सरल हृदय की तभी से छाप लगी हुई है। असली सेवक पहले ही बहुत कम रह गए हैं- अब यह भी चले गए। बहुत अफसोस! परलोक में उनके मंगलमय जीवन के लिए शुभ-कामना करता हूँ।

एक बार पुनः आपका हार्दिक धन्यवाद।

(चन्द्र गुप्त)

मनुष्य – आत्मा की नियति।

(परम पूजनीय भगवान देवात्मा की अनुरागी शिष्या श्रद्धया डा० कुमारी प्रेम देवी जी ने परलोक से सन 1899, अर्थात आज से लगभग 115 वर्ष पहले सत्य - धर्म के ज्ञान के महत्व को दर्शाने की आकांक्षा को लेकर जो एक अति - महत्वपूर्ण उपदेश श्रीमान मुंशी राम जी तथा श्रीमान सदा राम जी के माध्यम से लिखवाया था, उसके आधार पर एक लेख प्रकाशित किया जाता है, ताकि पाठक हृदयगत भावों से विचार पूर्वक पढ़कर लाभान्वित हो सकें।

रेगिस्तान में जो कितने हि बड़े रेत के ऊंचे टीले दिखाई देते हैं, वह एक दिन में इतने ऊंचे नहीं हो गए। धीरे धीरे थोड़ी थोड़ी रेत एक जगह इकट्ठी होती रहती है, और समय के साथ साथ वहां एक ऊंचा टीला बन जाता है। ठीक इसी तरह, जब कोई मनुष्य का बच्चा इस नारकीय - जगत (अर्थात मनुष्यों के नीच भावों से निर्मित वातावरण) में जन्म लेता है, तो क्योंकि उसके चारों ओर जो नारकीय जीव रहते हैं, उनके बीच में रह कर परवरिश पाते पाते वह बच्चा उनके बुरे प्रभावों को अनजाने तौर पर हि ग्रहण तथा आत्मसात करता रहता है। उसके चारों ओर उन नारकीय मनुष्यों के नीच तथा पापमय स्वभाव की गंदगी की रेत उड़ उड़ कर उसके भीतर इकट्ठी होती रहती है और अन्ततः उसके भीतर गंदगी का एक बड़ा ढेर (टीला) इकट्ठा हो जाता है।

जितने समय तक वह बच्चा उस नारकीय वातावरण में रहता है, उसके अन्दर वह गन्दगी निरंतर जाती रहती है तथा गंदगी के महसूस करने के उसके बोध धीरे धीरे मारे जाते हैं। अब वह अपने आपको मैला और गंदा नहीं समझता। उसको विनाश के मार्ग पर जाते हुए देख कर यदि कोई उसका हितकारी उसके पास आकर कहे कि भाई, तुम अपने भीतर बहुत गंदगी बढ़ा चुके हो, तुम्हारी सुध - बुध मारी गई है, तुम नहीं जानते कि तुम आत्मविनाश की ओर जा रहे हो। अब भी यदि तुमने अपनी आत्मा की सुध न ली, तो शीघ्र ऐसा समय आएगा कि तुम इस विश्व के भीतर से पूरी तरह नष्ट हो जाओगे।

वह बेचारा यह सब सुनता है, और कहता है कि आप यह क्या कह रहे हैं? मैं तो कोई पाप - कर्म नहीं करता। आप कहते हैं कि मेरे अन्दर पाप की गंदगी का ढेर जमा हो गया है। पता नहीं इनको मेरे अन्दर क्या दिखाई देता है? यह कहते हैं "मैं अधम - लोक में जा पड़ूंगा, विनाश को प्राप्त हो जाऊंगा।" वह बेचारा समझता है कि मैं तो कितनों से अच्छा हूँ। ओह! उसका पता हि नहीं कि वह स्थूल - शरीर के भीतर रहने वाला सूक्ष्म आत्मा है, जो जन्म काल से हि गंदे और नीच वातावरण में रहकर अपने भीतर गंदे भावों की गंदगी इकट्ठी करता आ रहा है। यह गंदगी बाहर की आँखों से दिखाई नहीं देती। वह कहता है कि मुझे तो अपना कोई पाप - कर्म दिखाई नहीं देता। प्रकृति में जो अटल नियम काम करते हैं, उस बेचारे को उनका कुछ पता नहीं। वह नहीं जानता कि मेरे चारों ओर जो नारकीय जीव आबाद हैं, मैं जिनके घर में जन्मा, वह सारे के सारे अनजाने तौर पर हि सही - नीच गति के राही, विषय - वासनाओं के दास, आत्मिक - विचार से पूर्णतः बेहोश, नीच भावों का प्रतिदिन ज़हर खाने वाले हैं - ऐसे लोगों के बीच में रह कर वह उनके नीच प्रभावों को ग्रहण किए बिना कैसे रह सकता है। उम्र के एक

पड़ाव पर आकर एक बुज़ुर्ग माता की सूंघने की शक्ति मर गई थी। अत: जिस मनुष्य की बोध- शक्तियां किसी कारण से मर जाती हैं या दुर्बल हो जाती हैं, वह किसी समय भी बहुत बड़ी मुसीबत में फंस तथा मर भी सकता है।

उसको यदि कहें कि तुम्हें तो केवल अपना स्थूल-शरीर हि दिखाई देता है। इसके भीतर रहने वाला सूक्ष्म'आत्मा दिखाई नहीं देता। तुम अपने जीवन की जांच पड़ताल करो। तुम्हारी जो इतनी आयु गुज़र गई, उसके हित के लिए क्या तुमने कोई ऐसा नियम पूरा किया है जिससे तुम्हारी सूक्ष्म-आत्मा की रक्षा हो सके। ऐसी अपील सुन कर भी उसे कुछ समझ नहीं आता। उसे नहीं पता कि वह खुद भी नारकीय-जीव बन कर इस विश्व के भीतर से ख़त्म होने की राह पर चल रहा है।

इस दुनिया के भीतर उस मनुष्य का बहुत बड़ा सौभाग्य है- जो अपने आपको देख सके। हम में से प्राय: सभी के भीतर जीवन-दाता (भगवान देवात्मा) की देव-ज्योति पाकर अपने आपको देखने की कम या अधिक आँख (आंतरिक सूझ-बूझ) भी पैदा हो चुकी है। इस अवस्था के लाने में जीवन-दाता तथा उनके प्रेमकों ने बहुत संग्राम किये हैं तथा दु:ख उठाए है। उन्हें हमारे भले के लिए बहुत रोना और बिलबिलाना पड़ा है। लाखों नहीं बल्कि करोड़ों आत्मा भावों के विचार से गंदे और मलीन होकर भी अपने आपको भला मानस समझते हैं तथा बहुत खुश तथा तसल्ली में रहते हैं। जीवन-दाता की ज्योति पाकर हम अपने वास्तविक मैले और गंदे रूप को देखने के योग्य होते हैं। तथा अपनी ऐसी अवस्था को देख कर बहुत दु:ख बोध करने लगते हैं, तथा उससे मुक्ति पाना चाहते हैं।

हमारे आस पास सांसारिक दृष्टि से कहलाने वाले जो बड़े बड़े विद्वान, धनवान, तथा ऊंचे ऊंचे पदों पर काम करने वाले रहते हैं, क्या वह अपने वास्तविक रूप को देखते हैं? नहीं, बिलकुल नहीं। अन्धकार में रहने के कारण, बाहर के हालात उनकी आँखों में अधिक धूल डाल कर उनको अपना वास्तविक गंदा रूप देखने के योग्य हि नहीं रहने देते। हमारे बड़े धन्यभाग! कि इस आत्म-अन्धकार परिपूर्ण जगत में हमें ज्योति-दाता की शरण प्राप्त हो गई। उनके और उनके प्रेमकों के चरणों में बैठकर हम जीवन-ज्योति लाभ करने के अधिकारी हो गए। परन्तु प्रश्न यह है कि इस उच्च-अधिकार को लाभ करके, क्या हम अपने अन्दर के नीच भावों की गन्दगी को देखने और उसे दूर करने के योग्य हो गए हैं? क्या यह गंदगी हमें बुरी लगने तथा इससे हमें डर लगने लग गया है? क्या हम इससे शुद्धि लाभ करने के संग्राम में लग गए हैं? जांच करने पर पता चलेगा कि अभी हमारे भीतर ऐसी कोई हलचल पैदा नहीं हुई। अभी हमारी आत्मिक-अवस्था बहुत कृपा-पात्र है। यदि असंयम से किसी शरीरधारी का खून खराब हो जाए, शरीर पर फोड़े फ़ंसियां निकल आवें, ज़ख्मों से पीप जारी हो जाए, तो फिर? चूंकि उसको शरीर का बोध है, इसलिए वह महसूस करता है कि यदि मेरे शरीर की यह अवस्था इसी तरह जारी रही, तो मेरी अवश्य मृत्यु हो जाएगी। इसलिए वह अपना समुचित इलाज करवाता है।

हो सकता है कि वह स्वास्थ्य भी हो जाए। परन्तु जिस आत्मा के भीतर भाव रूपी खून खराब होकर प्रत्येक अंग में फोड़े निकल आये हों, सारे आत्मिक-अंगों से पीप जारी हो गई हो, और यह आत्मिक-कोढ़ उसे दिखाई न देता हो, (जैसा कि

करोड़ों लोगों को दिखाई नहीं देता) तो इस में क्या शक है कि जो समय गुजरता जाता है वह उसको आत्मिक-मृत्यु की ओर धकेलता जाता है। विश्व में ऐसा कोई नियम नहीं जो ऐसे जन को इस लिए क्षमा करदे कि यह बेचारा आत्मिक-बेहोशी का शिकार था, अबोधी था, इसे पता नहीं था। (Ignorance of law is of no excuse)। इस पर दया की जाए, इसे क्षमा कर दिया जाए, इसका अस्तित्व ख़तम न हो। इससे अधम-लोक के दु:ख और अज़ाब न सहने पड़ें।

अत: जिन जिन जनों को जीवन-दाता (भगवान् देवात्मा) धर्म-दाता के रूप में प्राप्त हो गए हैं तथा उनके प्रेमक इस धर्म-मार्ग में सहायकारी के रूप में प्राप्त हो गए हैं, उनके लिए अति आवश्यक है कि वह अपने आपको धर्म- दाता के पूर्ण रूप से हवाले कर दें, क्योंकि वह आत्म-ज्ञान देने की पूर्ण सामर्थ्य रखते हैं। यदि तुम सही रूप से अपने आपको उनके हवाले कर सको, तो वह तुम्हारा आत्मिक-कोढ़ दूर कर सकते हैं। तुमको सुंदर और श्रेष्ठ बना सकते हैं। जिन नीच भावों की दासता में तुम फंसे रहकर अपना नाश कर रहे हो, उनके पंजे से वह तुम्हें निकाल सकते हैं। मनुष्य-शरीर का इस दुनिया में किसी से कोई इकरार-नामा (Agreement) नहीं है। अपने आत्मिक- कल्याण में इसको जितना काम में ला सकते हो, उतना लाने का यत्न करो। याद रखो! कि यह मानव-शरीर तुम्हारे हाथों में बहुत थोड़े दिनों के लिए है। यह तुम्हें इस लिए नहीं मिला कि इसके द्वारा तुम अपना आत्म-नाश करो। सोचो तो सही, जिन सांसारिक सामानों, मान, बड़ाई, धन संपत्ति को तुम अपने माने बैठे हो, उनके द्वारा तुम्हारे आत्मा का नाश हो गया तो वह सब तुम्हारे किस काम के?

अपनी आँखों के सामने जिनको तुम धनवान, विद्वान्, मान-सन्मान वाला समझते हो, जो यहाँ घोड़ा-गाड़ियों पर सवार होते हैं, जिनको लोग सलामें करते हैं, यहाँ से विदा होने पर नीच भाव-धारी होने के कारण उनकी जो परलोक में दुर्गति होती है, जो भयानक अज़ाब और कष्ट भोगने के वह अधिकारी होते हैं, यदि तुम उनके इन हालात को देख सको, तब तुम्हें पता लगे कि यहाँ के मान-सन्मान, धन, संपत्ति का क्या मूल्य है। अधम-लोक में ऐसे आत्मा हाहाकार मचाते हैं, दुहाईयाँ देते हैं कि किसी तरह हमारा अस्तित्व शीघ्र नष्ट और ख़त्म हो जाए। यह अज़ाब और कष्ट हमसे भोगे नहीं जाते। परन्तु इन दुखों और कष्टों से इनका पीछा नहीं छूटता। स्थूल-शरीर को आदमी ज़हर खाकर, या किसी और विधि से नष्ट कर सकता है, परन्तु आत्मिक-जीवन को इस प्रकार नष्ट नहीं कर सकता। (अर्थात परलोक में आत्म-हत्या नहीं की जा सकती। वहां तो मरने के लिए भी प्रकृति की स्थापित प्रक्रिया को वर्षों में पूरा करना पड़ता है) चंद दिनों के नीच सुखों के पीछे कौन ऐसा पागल है, जो वर्षों तक अधम-लोक के अज़ाबों को अपने ऊपर लेने तथा अंत में आत्मिक-मृत्यु को गले लगाने के लिए तैयार हो।

अत: प्रत्येक मनुष्य के लिए यह परम आवश्यक है कि वह अपने अस्तित्व (विशेषकर आत्मा) का सत्य-धर्म मूलक सत्य-ज्ञान लाभ करे। जिन नियमों के पूरा करने से आत्मा की हानि और मृत्यु होती है, उनसे बचने तथा जिन नियमों के पूरा करने से आत्मा की रक्षा और विकास होता है, उनका अपने जीवन में शत-प्रति-शत पालन करे। यदि वह ऐसा नहीं करता, तो यह बात सदा याद रखनी चाहिए कि ऐसे जन की आत्मा की एक दिन अवश्य मृत्यु हो जाएगी।

एक सभा में बैठकर

आज कृतज्ञता की सभा में बैठकर उपकारियों के बहुत उपकार सामने आए। सर्वप्रथम अपने जन्मदाता, मेरे अस्तित्व के दाता माता पिता का उपकार नज़र आया जिन्होंने सच्च बोलने वा ईमानदारी की शिक्षा दी। मुझे ऐसी अध्यात्मिक पूंजी दी जिसके कारण मुझे पू० भगवान की शरण पाने का सौभाग्य मिला। इन उपकारियों में मुझे याद आए अपने बड़े भैय्या, जिन्होंने मुझे B.Ed. कालिज में दाख़िल करवाकर नव जीवन दिया। वह मेरी कालिज की हर आवश्यकता को पूरा करते। यदि वह B.Ed. में दाखिल न करवाते तो मैं अपनी रोज़ी कमाने के योग्य न होती और सबसे बड़ी खुशकिस्मती कि मैं कालिज में विनीत दीदी से मिली, जिन्होनें मुझे छोटी बच्ची की तरह सम्भाला और मुझ तक परम पू० भगवान देवात्मा का संदेश पहुंचाया। पंचकूला में रहते हुए मैं हर रविवार को सभा में आती और दीदी मुझे हमेशा कहती कि अपने से निकलकर दूसरों के काम आना चाहिए, इससे जीवन बनता है। पूजनीय देव शास्त्र चौथा खण्ड भेंट स्वरूप दिया।

मैं होस्टल में वार्डन थी। मैं सभा में आई हुई थी, तो मेरे पीछे बच्चे ताश खेलने लग गए। मुझे बहुत गुस्सा आया मैंने उन्हें कपड़े धोने वाले थापे से पीटा। पीछे से बहुत रोई तो दीदी को बताया, उन्होंने कहा कि अपने आपसे पूछो कि यह घमंड के आंसू है या पश्चाताप के आंसू हैं। मैंने जीजी का संग्राम देखा। एक बार मैं उनके घर गई, तो जीजी, शशी बहन जी को एक उर्दू की किताब का हिन्दी में अनुवाद करवा रही थी, जब लोगों के आराम का समय होता है, वह भले में लगी हुई थी, मैं बहुत प्रभावित हुई। मेरे भैय्य भी जीजी की दी हुई पुस्तकें पढ़ते थे। जीजी मेरे घमण्डी रूप को दिखाने का भरसक प्रयास करती। मैं देव समाज के वातावरण से जुड़े रहना चाहती थी। जब देव समाज स्कूल अम्बाला में मुझे नौकरी मिली तो जीजी और पापा जी ने मुझे बहुत सहयोग दिया। मैं उनकी सदा अभारी रहूंगी। विनोद भाई साहिब नीति करवाते, वह मेरे जीवन का golden period था। सभा में अपनी गतियां शीशे की तरह नज़र आने लगती थी। मुझे नज़र आया कि जब हम बच्चों को मारते हैं तो अपनी frustration निकालते हैं। बच्चों पर गुस्सा आता तो हाथ रुक जाता। विनीत दीदी ने मुझे सच्चे साधन का अर्थ बताया।

मुझे उपकारियों की इस लड़ी में अपने छोटे भाई के उपकार सामने आए, जिन्होंने नौकरी पर जाते हुए मुझे बहुत ही आवश्यक हिदायतें दी, जिन्होंने सदा मेरा मार्ग-दर्शन किया। उन्होंने कहा कि उनका घर सदा मेरे लिए खुला है, मेरे चाचा जी और चाची ने, ताया जी ने मुझे अपनी बेटी की तरह ही समझा।

अम्बाला में एक लड़की Math पढ़ाने आती थी, जो मेरी सहेली बन गई, उनकी माता जी भी मुझे बहुत प्यार करती हैं।

यह उपकारों की लड़ी तो थमती नहीं। पूजनीय भगवान की कृपा से यह उपकारी नज़र आए हैं। पापा जी ने भी मुझे बहुत प्यार दिया। Science grounded Religion किताब free में दी। काश! मैं भगवान से पाए दान का कुछ ऋण परिशोध करने के योग्य बन जाऊं, यही भगवान से प्रार्थना है।

अशोका (अम्बाला)

किसी भी जगह हो रहा अन्याय हर स्थान पर न्याय के लिए खतरा है

* हमारे जीवन का उस दिन अंत होना शुरू हो जाता है, जिस दिन हम उन मुद्दों के बारे में चुप हो जाते हैं जो आम समाज के लिए मायने रखते हैं।
* हमें सीमित निराशा को स्वीकार करना चाहिए, लेकिन असीमित आशा को कभी नहीं भूलना चाहिए।
* व्यक्ति का निर्णायक आंकलन इससे नहीं होता है कि वह सुख व सहूलियत की घड़ी में कहां खड़ा है, बल्कि इससे होता कि वह चुनौती और विवाद के समय में कहां खड़ा होता है।
* यदि तुम उड़ नहीं सकते हो तो दौड़ो यदि तुम दौड़ नहीं सकते हो तो चलो, यदि तुम चल नहीं सकते हो तो रेंगो । लेकिन, तुम जैसे भी करो, तुम्हें आगे बढ़ना ही होगा।
* प्रेम एकमात्र ऐसी शक्ति है जो शत्रु को मित्र में बदल सकती है।
* सबसे बड़ी त्रासदी बुरे व्यक्तियों का अत्याचार और दमन नहीं बल्कि इस पर अच्छे लोगों का मौन रहना है।
* सच्ची शिक्षा का लक्ष्य चरित्र के साथ बुद्धिमत्ता का विकास करना है। पूरी एकाग्रता से विचार करने की क्षमता देना ही शिक्षा का कार्य है।
* आपके ऊपर तब तक कोई सवार नहीं हो सकता जब तक कि आपकी कमर झुकी नहीं हो, इसलिए अपनी कमर सीधी करें और लक्ष्य के लिए काम करने में जुट जाएं।
* हमारी वैज्ञानिक शक्ति ने हमारी आध्यात्मिक शक्ति को कुचल दिया। हमारे पास गाइडेड मिसाइल तो है, लेकिन लोग मिस गाइडेड हैं।
* प्रत्येक व्यक्ति को यह फैसला कर लेना चाहिए कि वह रचनात्मक परोपकारिता के आलोक में चलेगा या विनाशकारी खुदगर्जी के अंधेरे में।
* मानव की प्रगति कभी अपने आप नहीं होती। न्याय के लक्ष्य की ओर बढ़ाए गए हर कदम पर बलिदान, संघर्ष और तकलीफें होती हैं। लक्ष्य के लिए समर्पित व्यक्तियों का अथक परिश्रम और जुनून होता है।
* दमनकर्ता और अत्याचारी कभी अपनी खुशी से स्वतंत्रता नहीं देंगे। अत्याचार व दमन भुगतने वालों को इसकी मांग करनी होगी, तभी यह मिलेगी।
* व्यक्ति जब तक व्यक्तिगत चिंताओं के दायरे से ऊपर उठकर पूरी मानवता की वृहद चिंताओं के बारे में नहीं सोचता तब तक उसने जिंदगी जीना ही शुरू नहीं किया है।
* कानून-व्यवस्था न्याय की स्थापना के लिए होते हैं और जब हम इसमें नाकाम रहते हैं तो वे खतरनाक ढंग से बने बांध की तरह हो जाते हैं, जो सामाजिक प्रगति के प्रवाह को थाम लेते हैं।

(मार्टिन लूथर किंग जेनियर)

शुभ संग्राम

श्रीमान् बलबहादुर सिंह जी ने एक हफ्ता 25 अगस्त से पहली सितम्बर तक पदमपुर में ठहरकर संग्राम किया। सुबह शाम सभाएं होती रही। गजसिंह पुरा से श्रीमान् दूनीचन्द जी और उनके सुपुत्र खेमचन्द जी पहले ही पहुंचे हुए थे। बंगा (ज़िला नवांशहर) से एक नौजवान बहुत इच्छा करके डाक्टर मुन्शा सिंह जी की प्रेरणा से पहुंच गए थे। गंगा नगर से श्रीमान् प्यारा सिंह जी, भाटिया साहिब, श्रीमान् गोपाल कृष्ण जी और उनके दो साथी सभाओं में आकर शामिल हुए। गुरु कृपा से कई सभाओं में बहुत अच्छा मण्डल बनता रहा। कुछ जन जो पुराने सत्संगी हैं, उनमें से एक जन ने हफ्ते के लिए और दो जनों ने हमेशा के लिए शराब छोड़ी और मदद के लिए भी प्रार्थना की। एक जन ने सिगरेट से बचने के लिए मदद की प्रार्थना की। कुछ जनों ने डेराबस्सी सत्संग पर पहुंचने का प्रण किया। 31 अगस्त को श्रीमान जी गंगा नगर पहुंचे और रात 7.30 बजे श्रीमान प्यारा सिंह जी के घर एक सभा रखी। जिसमें प्रिंसीपल साहिब और एक रिटायरड अध्यापक समेत कई जनों के लाभ उठाया । एक सितम्बर को इस शुभ संग्राम के बाद श्रीमान जी भंटिडा आ गए।

मल्लेका :- 4 सितम्बर से 7 सितम्बर तक श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने मल्लेका सरसा में सत्संग रखने का शुभ संग्राम किया। पहली सभा में बहुत ज़ोरदार बारिश हो रही थी। 15-20 जन कारों वा मोटरसाईकलों पर मल्लेका केसूपुरा से आए। सुबह भी बारिश थी। उसके बाद बहुत अच्छी संख्या बढ़ती रही। एक सभा में एक पति पत्नी ने बहुत सुन्दर भावों का प्रकाश किया। सत्संगियों में मिठाई भी बांटी । अपने एक विशेष उपकारी के उपकारों का भी हृदयगत भावों से धन्यवाद किया।

एक ज़मीदार परिवार के बड़ी उमर के दम्पति ने एक दूसरे के गुणों वा उपकारों को बताकर मण्डल बना दिया। मन्दिर के लिए धर्म सम्बन्धियों ने खुशी खुशी दान दिया। 7 सितम्बर को 2 धर्म सम्बन्धी श्रीमान जी को सिरसा तक छोड़कर आए।

कल्याण:- 8 सितम्बर को श्रीमान बलबहादुर सिंह जी तलवंडी साबो से कल्याण पहुंच गए। उन्होंने गांववासियों को सूचित किया कि श्रीमान बलदेव सिंह जी 9 सितम्बर को सत्संग के लिए आ रहे हैं। श्रीमान जी 9 सितम्बर को समराला में बीबी वीरपाल जी को सत्संग की सूचना देकर मोगा पहुंच गए। वहां श्रीमान रूपचन्द जी के भतीजों, श्री दीपक जी सन्धू और मास्टर अवतार सिंह जी के परिवार को मिले। सब को सत्संग की सूचना दी। फिर थराजवाल गांव में नम्बरदार गुरुबचन सिंह जी की सेहत का पता लिया। देव समाज मोगा के स्कूल के एक पुराने विद्यार्थी सरदार हरपाल सिंह जी को ढूंड कर मिले उन्होंने बहुत खुशी अनुभव की। 5 बजे के लगभग कल्याण पहुंच गए। श्रीमान बलबहादुर सिंह जी को साथ लेकर वह श्रीमान कुलदीप सिंह जी और मास्टर भाग सिंह जी के घर गए। दोनों परिवार कई कष्टों में से गुज़रे हैं, उनसे हमदर्दी प्रगट की। 9 तारीख की शाम वा 10 सितम्बर सुबह श्रीमान जी ने समाएं करवाई। जिसमें लगभग सब साथी सेवक वा कुछ नये जन आकर शामिल हुए। पहली सभा में बताया गया कि किस प्रकार मनुष्य पर संगत या वातावरण का प्रभाव पड़ता है। सुबह की सभा में बताया गया कि पशु अपने शरीर को भी नहीं जानता। हर मनुष्य अपने शरीर के लिए ही सारी उमर जीता है। शारीरिक सुखों की पूर्ति के लिए धन प्राप्ति लक्ष्य बना लेता है। पुराने धर्म ईश्वर प्राप्ति की ही शिक्षा देते हैं।

मनुष्य को शरीर से आगे मानसिक शक्तियों और उसको चलाने वाली शक्तियों का ज्ञान केवल देव धर्म देता है। देव धर्म ही मनुष्य के विषय में सच्चा ज्ञान देता है। बहुत धनवान होकर, बड़ा पदधारी होकर, बहुत सी योग्यताएं रखकर और बड़ी बड़ी प्राप्तियों करके भी मनुष्य जीवन की सफलता नहीं होती। मनुष्य जीवन बर्बाद जाता है। मनुष्य अनुचित दुखों में फंसकर बड़े कष्ट भोगने के लिए मजबूर होते हैं। हम सम्बन्धों में नर्क को भोगकर जीते हैं। 10 सितम्बर को यह दोनों धर्म सम्बन्धी गोनियाना पहुंचे और शाम को 8.30 बजे सभा रखी।

गोनियाना: - रात 8.30 बजे श्रीमान हरबंस लाल जी रिटायर्ड हैडमास्टर के घर सभा रखी गई जिसमें 30 - 35 जन शामिल थे। श्रीमान बलबहादुर सिंह जी सभापति जी ने बताया कि सब व्यवहारों द्वारा ही धर्म आता है। उन्होंने एक बहुत अच्छी स्त्री के परिवार और अन्य रिश्तेदारों के सम्बन्ध में शुभ व्यवहारों का विस्तार से वर्णन किया।

कई और जनों के शुभ व्यवहारों के विषय में बताया अपने परिवार में, समाज में, जो हम व्यवहार करते हैं, वही धर्म होता है। नीच भावों से प्रेरित होकर मनुष्य ग़ल्त व्यवहार वा पाप करता है। देवात्मा सत्गुरु के प्रभाव शुभ व्यवहारों का ज्ञान या प्रेरणा देते हैं। बाद में श्रीमान बलदेव सिंह जी ने इस बात पर रोशनी डाली कि शुभ व्यवहार शुभ भावों के द्वारा होते हैं। उन्होंने श्रद्धा, शुक्रगुज़ारी, हमदर्दी और हानि परिशोध के शुभ भावों की महिमा का वर्णन करते हुए इन्हें पैदा करने की अत्यन्त आवश्यकता पर ज़ोर दिया।

11.9.2014 सुबह 9 बजे: - समापति श्रीमान बलदेव सिंह जी । इस सभा में श्री सभापति जी ने बताया कि जैसे कश्मीर में पानी के सैलाब ने बेशुमार तबाही मचाई है। मानव समाज में नीच वासनाओं के भी सैलाब आए हुए हैं।

प्रतिदिन बलात्कार की ख़बरों से समाचार पत्र भरे हुए होते हैं टी. वी. पर भी यही खबरें देखने को मिलती हैं। मनुष्य की काम वासना ने महा घृणित और दिल को कंपा देने वाली घटनाएं पैदा करके मानवता को शर्म सार किया हुआ है। स्वार्थ वा धन अनुराग ने बेईमानी, रिश्वत, चोरी, ठगी, हेराफेरी ने हमारे देश को महा कलंकित किया हुआ है। निकट से निकट के सम्बन्धों में महा नर्क छाया हुआ है। माता पिता सन्तान से महा दुखी हैं। पिता सन्तान से दुखी होकर बेटे पर मुकदमा कर रहा है। श्रीमान जी ने इस चिन्ताजनक अवस्था का अत्यन्त स्पष्ट चित्रण किया। फिर बताया कि परम पूजनीय भगवान देवात्मा के देव प्रभावों के द्वारा इस नीच जीवन के सैलाब को उच्च परिवर्तन पैदा करके महा नारकिय अवस्था को स्वर्गीय बनाया जा सकता है। श्रीमान रूपचन्द जी के सुन्दर परिवर्तन से जो महा सौभाग्य प्राप्त हुआ उसका वर्णन करते हुए अपने अनमोल सौभाग्य का वर्णन किया।

8.30 बजे रात सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी: - श्रीमान जी ने बताया कि नेचर के चारों जगतों में नेचर के नियम काम करते हैं। चारों जगतों की उदाहरणें पेश की गई। मनुष्य के कल्याण के लिए उच्च संगत के नियम को अपनी स्वयं की ज़िन्दगी की पारिवारिक घटनाओं को पेश किया। गुरु महाराज की देव प्रभावदायक संगत रोशनी और ताकत प्रदान करती है। उसका शुक्रिया करते हुए गुरु की महिमा का गान किया। शुभ व्यवहार करने का नियम उच्च भावनाएं है। एक शुक्रगुज़ार लड़की के शुक्राने के भाव की तस्वीर पेश की। उनके ब्यान के बाद श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि मनुष्य को

उसकी भाव शक्तियां चलाती हैं। नशा सुख अनुराग, धन सुख अनुराग की भयानक शक्तियों का विस्तार पूर्वक ब्यान किया।

12.9.2014 सुबह 9 बजे- सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि यह तो आम तौर पर समझते हैं कि हवा, पानी, खुराक के बिना जीवन सम्भव नहीं। धन की भी ज़रुरत है, क्योंकि इसके बिना भोजन, दवाई और आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं होती। आज के युग में जो विज्ञान के बिना जीवन स्वीकार करेगा, वह दुख उठाएगा। देव धर्म, धर्म का विज्ञान है, इसके बिना जीना भी महा दुर्भाग्य और हानियां उठाना है, महा दुखों में फंसना वा जीवन बर्बाद करना है । श्रीमान जी ने चने का एक दाना दिखाकर जीवनी शक्ति अर्थात आत्मा पर रोशनी डाली। देव धर्म वा उसकी देव प्रभाव दायक संगत का हृदय स्पर्षिय शब्दों में ब्यान किया। सभा के अन्त में 750 रुपये दान प्राप्त हुआ।

थराजवाला शाम 5.30 बजे:- गोनियाना से यह दोनों धर्म सम्बन्धी शाम 3.50 बजे तक थराजवाला पहुंच गए। सब धर्म सम्बन्धियों को शाम 5. 30 बजे की सभा की सूचना दी गई । 22 - 23 जन सभा में शामिल हुए। सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने उच्च संगत की महिमा पर सभा कराई। मनुष्य को उच्च संगत से दूर भले बुरे का बोध नहीं रहता। कुछ अपनी आन्तरिक प्रकृति और बाकी नीच सुखों का ज़ोरदार वातावरण मनुष्य की होश मार देते हैं। नीच वासनाएं मनुष्य का महा नाश करती हैं। नशा सुख अनुराग, स्वाद सुख अनुराग, प्रशंसा आदि की वासनाओं का उदाहरणों द्वारा वर्णन किया। देव समाज के परिवारों के बच्चे भी किस प्रकार बर्बाद होकर बेवक़त मौत का शिकार हुए हैं। घर 2 नर्क पैदा हो रहा है। परम पूजनीय भगवान देवात्मा के देव प्रभावों के द्वारा हमें दुर्लभ संगत मिली हैं, जिसकी हर परिवार और समाज को अत्यन्त आवश्यकता है। श्रीमान बलदेव सिंह जी ने भी एक प्रिंसीपल की असमय मौत की शिक्षाप्रद कहानी बताई। उच्च मूल्यों की उच्च संगत में ही क़दर होती है। इस संगत में ही हम अपने अन्दर के शत्रुओं को जान सकते हैं। काश! हम देवात्मा के अमूल्य प्रभाव पा सकें।

13.9.2014 सुबह 9 बजे:- समाभति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि बड़े कर्मचारी यह बताया करते थे हंसों को बोली कौओं को समझ नहीं आती। हम नीचों को महापुरुषों की बोली समझ नहीं आती। आम देव समाज के सेवकों को कर्मचारियों की बोली समझ नहीं आती। हर घटना के पीछे कोई कारण होता है। यदि भार घटाना हो तो नियम हैं। कैदी महा दुखी होते हैं। अनुचित दुखों से मुक्त होने के लिए पापों से मुक्त होना आवश्यक हैं। बड़े 2 मुख्य मंत्री, अन्य मंत्री पापों में ग्रस्त होकर दुखों के भागी बनते हैं। सिगरेट की गुलामी से दुखों का स्पष्ट चित्रण किया। नशे का गुलाम परलोक में भी दुखी होता है। नशे का गुलाम किसी का सगा नहीं होता। मां, बाप, पत्नी, सन्तान के दुखों से भी सरोकार नहीं रखता। नशे को गुलामी शहनशाहों को भी नंग मलंग बना देती है। देवात्मा केवल मात्र पाप के शत्रु हैं। मनुष्य का भला, उनकी पैदा की हुई संगत का सच्चा ग्राहक बनने में है। उनकी महान शक्ति पापों का नाश करती है। इसके बाद श्रीमान बलदेव सिंह जी वापिस चण्डीगढ़ आ गए और श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने एक दिन और ठहरकर सभाएं करवाई।

(एक सेवक)

Published on 5th of the month
20
Regd. Postal No.CHD (0077) 2012-14
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

खुश रहने की अपनी आदतों को पहचानों

बड़ी से बड़ी समस्याओं से घिरे लोग भी अपनी रोज को आदतों में थोड़ा बहुत बदलाव लाकर शिखर पर पहुंच जाते हैं। इसका एक और मंत्र हैं हर-हाल में खुश रहना। खुश रहने की यह आदत हर व्यक्ति में होती है, बस इसे पहचानने की जरूरत है।

* एक सर्वे में सामने आया है कि जो लोग अपने चार या उससे ज्यादा दोस्तों से अपनी समस्याएं शेयर करते हैं, वे दूसरों की अपेक्षा ज्यादा खुश रहते हैं, यहां दोस्तों की संख्या से ज्यादा महत्त्वपूर्ण संबंध हैं। जो हर समय आपको मजबूती देते हैं और संकट से उबारते हैं।

* खुश रहने वाले लोग आगे चलकर हमेशा सफल रहते हैं। ऐसा इसलिए कि वे सफलता और विफलता को अलग-अलग नजरिए से देखते हैं। कुछ गलत होने पर वे उसे निजी रूप से नहीं लेते और अच्छा होने पर सिर उठा कर नहीं घूमते।

* इसकी परवाह न करें कि लोग आपके बारे में क्या बुरा कहते हैं। इससे यह सीख लें कि हमें ऐसा नहीं करना है।

* कभी अपने गुजरे हुए समय को आज पर हावी होने का मौका नहीं दें। कोशिश इस बात की होनी चाहिए कि वर्तमान में बेहतर करते हुए आगे बढ़ें।

बहुत-बहुत मुबारक और धन्यवाद

श्रीमती शुभवती जी, पत्नी श्री गुरुबख्श सिंह जी (पुत्रवधु) श्रीमान बुद्ध सिंह जी) ज़ीरा ने अपने सत्गुरु जी के कारज के लिए बावजूद अपनी बिमारी की आवश्यकताओं के, अपने आप, अपनी तरफ से 20,000 रूपऐ दान भेजा है। वह इस समय लगभग 86 वर्ष की उमर की हैं। उनके भावों की शब्दों में प्रशंसा नहीं हो सकती हम उन्हें बहुत मुबारक और धन्यवाद देते हैं।

बलदेव सिंह

<u>महोत्सव मुबारक 5 दिसम्बर से 8 दिसम्बर तक मनाया जा रहा है।</u>

पाठकगण से निवेदन है कि जम्मू कश्मीर के भाईयों की सहायता के लिए दिल खोलकर प्रधान मन्त्री नैशनल रलीफ फंड में दान भेजें।

मन्त्री

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts